संत अलॉयसियस (स्वशासी) महाविद्यालय,

जबलपुर (म.प्र.)

प्रतिभा पत्रिका

2015—2016

मार्गदर्शक
डॉ. कैरोलिन सैनी
डॉ. रामेन्द्र प्रसाद ओझा
डॉ. रीना थॉमस

छात्र संपादक
रागिनी लहोरिया
अनीस अख्तर

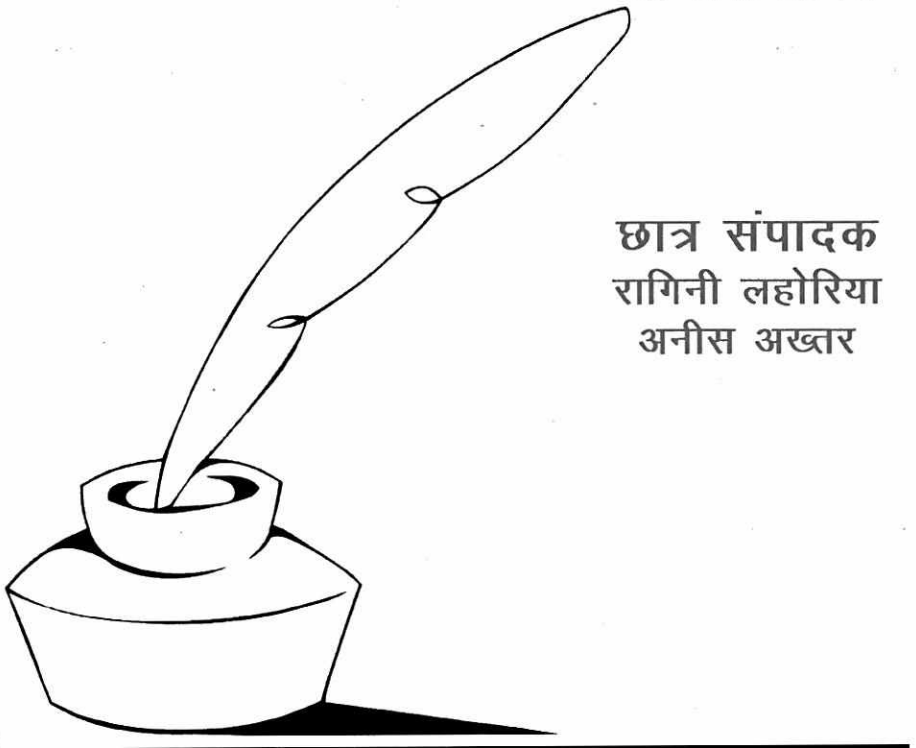

संपादकीय

किसी भी अवसर को कभी छोटा या बड़ा करके नहीं ऑकना चाहिए। प्रत्येक अवसर हमें कुछ सिखाता है और आगे बढ़ने में तथा अपना विकास करने मे सहायता करता है। अवसर के सदंर्भ में यह उचित ही कहा गया है कि अवसर को खो देना, सफलता को खो देना है। कुछ लोग उचित अवसर की तलाश में अपना संपूर्ण जीवन व्यर्थ कर देते है, और अंत में उनके हाथ कुछ नही लगता। इस समस्या से निपटने के लिए मनुष्य को अपने हाथो और परिश्रम पर अधिक से अधिक बल देना चाहिए क्योकि ईश्वर ही उन्हीं की मदद करता है जो अपनी मदद स्वंय करते है।

सार स्वरूप यह कहा जा सकता है कि मनुष्य को भाग्य भरोसे नहीं बैठे रहना चाहिए अपितु परिश्रम कर अपना भाग्य स्वंय बनाना चाहिए। विश्व के विभिन्न विद्वानों ने अपने जीवन ओर कार्यो द्वारा यह महान सीख प्रदान की है और हमें उसका सम्मान करना चाहिए।

रागिनी लहोरिया

अनीस अख्तर

अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्रमांक

- गुनाहो का अहसास दिया होता 1
- सेहत में निवेश 2
- स्त्री उत्सव 3
- माँ तुम कितनी अच्छी हो 4
- स्वच्छता अभियान 5
- चिड़िया से बतियाती औरत 6
- जिन्दगी 7
- मेरी मंजिल 8
- हँसो – हँसो 8
- नेता और चारा 9
- बेटियाँ 10
- शोर शराबे में डूबा है सारा जंहा 11
- कलयुग की द्रोपदी 12
- सवेरा 13
- पॉलिथीन 14
- बेटी की पुकार 16
- बच्चों की जिम्मेदारी किस पर? 17
- भक्ति का दुख समझें उसका दुख दूर होगा 18
- जीवन क्या है ? 19
- पढ़ाई और गुस्सा 19
- आजमाती है, जिदंगी उसी को 20
- "बुरा मत सोचो" 20
- प्रेरणा स्त्रोत 21
- डगर न भूलना 22
- सम्पूर्ण समाज में मानव कल्याण 23
- सोच 24
- आरजू 24
- दिल के जज्बात 25
- शिक्षा का महत्व 25
- सत्याभास (संकलित) 25
- मेरी भावना 26
- बेटी 27
- बुद्वि और साहस 28
- देश 29
- कविता 29
- सीखो 30
- पिता की भावनाएँ 31
- क्यों हम इतने बड़े हो गये? 32
- जय– पराजय 33
- सफलता का मूलमंत्र 34

गुनाहो का अहसास दिया होता

प्रीति चौबे
बी.ए पष्टम सेमेस्टर

गुनाहो का अहसास दिया होता

हर पल दिल में, तेरा डर अच्छा रहता

काश तूने दिया होता, खुदा का खौफ दिल में रहता

दिया भी तूने क्या, वफा जफा में खौफ दिया होता

मांगा भी तूने क्या, खुदा का इंसान रहता

गुनाह गारो के दिल में गुनाहो का एहसास दिया होता

उठातेहाथअगर भी, तेरे नाम का खौफ रहता

खंजर भी झुक गए हाथों में तेरा डर रहता

गुनाहगारों के दिल में तेरा डर हरदम रहता

न होते जुल्म कभी, तेरे ही ख्यालों मे रहता

खंजर शमशीर पे हरदम तेरी नजर का डर होता

भूल गया जुल्म सितम, डबा गया इबादत में रहता

जमाने से बेफिक्र, तेरे खौफ का डर होता

तलबगार रहता, हरदम, गुनाहो से गुमनाम रहता

कोई पूछता कहता भी, देखकर हरदम दूर रहता

हालात समझ न पाया, दिल में खुदा का खौफ रहता

धायाल दिल में हरदम नजरों का खौफ रहता।

सेहत में निवेश

रौशनी
पष्टम सेमेस्टर

अरुण की नौकरी लगी थी। वह सुबह से निकलता और जाकर शाम को घर में धुसता था। उसे काम पसंद था लेकिन उसे एक मलाल रहता था कि लंबी शिफ्ट के कारण वह अपने शरीर पर ध्यान नहीं दे पाता था। इसी के चलते उसने शाम के समय की फिटनेस क्लास में जाना शुरु कर दिया। अरुण के पिता को यह बात समझ नहीं आई। उन्होंने जोर देना शुरु कर दिया कि इस समय तुम्हे अतिरिक्त क्लासेस लेकर कैरियर में और आगे जाने पर निवेश करना चाहिए न कि इन बेकार की फिटनेस क्लासेस पर। अरुण अपने पिता को समझाा नहीं पाता था लेकिन फिटनेस से दूर होकर वह हमेशा थका हुआ रहता। तब एक दिन अरुण के दादा ने उसके पिता को समझाया – अपनी तंदरुस्ती पर ध्यान देने के लिए फिटनेस क्लास जाकर यह अपनी सेहत में निवेश कर रहा है। यह निवेश किसी भी फील्ड में आगे बढ़ने के लिए जरुरी है। फिटनेस न होने पर यह घर लौटकर वैसे भी कुछ करने लायक नहीं रहता। इसलिये इसे रोको मत। क्षमता का विस्तार तभी होगा, अरुण के पिता मूल बात समझ गये थे।

स्त्री उत्सव

दीक्षा लोधी

बी ए चतुर्थ सेमेस्टर

मैंने हँसना सीखा है
मै नही जानती रोना।
बरसा करता पल–पल पर
मेरे जीवन में सोना।

मै अब तक जान न पाई
कैसी होती है पीड़ा।
हँस–हँस जीवन में,
कैसे करती है क्रीड़ा

जग है असार सुनती हूँ
मुझको सुख–सार दिखाता।
मेरी आँखो के आगे,
सुख का सागर लहराता।

उत्साह ,उमंग निरन्तर,
रहते मेरे जीवन में।
उल्लास विजय का हँसता ,
मेरे मतवाले मन में।

आशा आलोकित करती,
मेरे जीवन को प्रतिक्षण।
हैं स्वर्ण सूत्र से वलचित,
मेरी असफलता के धन।

सुख भरे सुनहले बादल,
रहते है मुझको घेरे।
वि वास, प्रेम साहस है,
जीवन के साथी मेरे।

मॉ तुम कितनी अच्छी हो

आरती कुमारी
बी ए द्वितीय सेमेस्टर

मॉ तुम कितनी अच्छी हो।
धूप लगे तो आचॅल ओढा देती हो
बारिश आये तो, छाता लगा देती हो।।
लाख शैतानिंया करे हम
फिर भी तुम क्षमा कर देती हो।
मॉ तुम कितनी अच्छी हो।

हमें गोद में सुलाया तुमने
सीने से लगाया तुमने ,
प्यार से सहलाया तुमने ,
खुद आधा पेट खाना खाकर
हमारा पेट भर देती हो।
मॉ तुम कितनी अच्छी हो।

ममता की मूरत हो।
सुंदरता की सूरत हो।
हर काम मे तुम खरी हो
मॉ तुम कितनी अच्छी हो।

स्वच्छता अभियान

रेखा
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

मैं नहीं तू, तू नहीं मैं
सदा ही करते, तू तू मैं मैं
करो कभी, कोई अच्छा काम
बढाये जो, भारत देश का नाम
देश की धरोहर पर है सबका अधिकार
फिर क्यूँ है इसकी सफाई से इनकार
नहीं है कोई बहुत कढ़ा उपकार
बस करना है जीवन में बदलाव
शहर को मानकर धर अपना
निर्मल स्वच्छ है उसे भी रखना
कूड़े दान में फेंकों कूड़ा
हर जगह ना फेंकों कूड़ा
थूकने को नहीं है धरती मैया
बदलो अपनी आदत भैया
न करो किसी पड़ौसी का इंतजार
देश है सबका, बढ़ाओं स्वछता अभियान।

चिड़ि या से बतियाती औरत

कंचन गौतम

बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

ओ नन्ही चिड़िया

तुम इतनी सी होकर भी

कितनी बड़ी हो

जब चाहाती हो/ चहचाती हो

जब चाहती हो /उड जाती हो

और छूकर आती हो आकाश

अपनी क्षमता भर

गाती हो / गुनगुनाती हो

मुक्त कंठ से खिलखिलाती हो

कोई नहीं है तुम्हें

रोकने–टोकने वाला

नहीं है तुम पर

कोई बंधन परंपराओ का

अपने जीवन पर तुम्हारे है पूर्ण अधिकार

काश! मैं भी

एक नन्ही –सी चिड़िया होती।

जिन्दगी

अभिषेक

बी ए चतुर्थ सेमेस्टर

जिन्दगी जीने का नाम है
जिन्दगी खुशियों का सागर है।
जिन्दगी परिश्रमियों के लिए वरदान है,
जिन्दगी राम का दरिया भी है।
जिन्दगी में मानवता है।
जिन्दगी इंसानियत है,
तभी जिन्दगी इतनी खु ाहाल है।
जिन्दगी जीवन में कुछ करने के लिए है।
जिन्दगी एक लड़ाई है।
जिन्दगी हार और जीत है।
जिन्दगी एक अनुभव है।
जिन्दगी एक नौका है।
जिसे उस पार ले जाना है।
जिन्दगी एक दिया है।
जिसे रो ान करते ही जाना है।

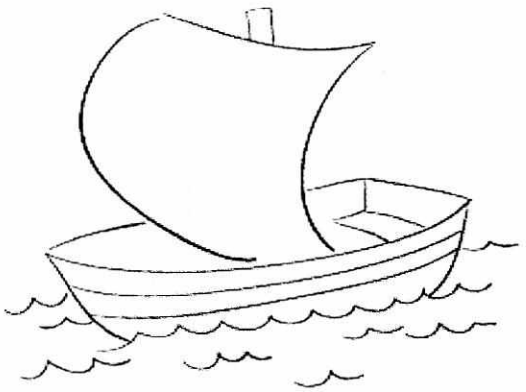

मेरी मंजिल

भक्ति कुर्मी

बी ए द्वितीय सेमेस्टर

"जब से मेरी मंजिल पर नजर है

ऑखों ने मेरी मील का पत्थर नही देखा"

मंजिल को पाने की सच्ची लगन जिसमें होती है वह अपनी राह में आने वाली रूकावटों व विश्राम की परवाह ही नहीं करता और लक्ष्य हासिल करने के लिये आवश्यक भी है और इन बातों का महत्व आज के समय को देखते हुये और भी बढ जाता है। जंहा प्रतिर्स्पाधाओं की भरमार है योग्यता के पैमाने और उसके मापदंड बहुत कठिन हो चले है। खासतौर पर शासकीय सेवाओं में जंहा संख्या की एक निश्चित सीमा होती है और उम्मीदवारों की संख्या हजारों लाखों में होती है। तब सिथ्ती को अपने पक्ष में वही व्यक्ति कर सकता है। जो लक्ष्य को हर समय हासिल करने का जज्बा रखें और मान कर चले।"जिनका लक्ष्य नहीं जीवन में ऐसे ही रह जाते है।जैसे हल्के फुल्के पत्ते पानी में बह जाते है।।

हँसो - हँसो

रेशमा तिर्की
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

1. संता :– यार बंता ये शादी के जोड़े कौन बनाता है?
   बंता :– आसमान में भगवान बनाते हैं।
   संता :– ओ! तेरी यार, गलती हो गई
   बंता :– क्यों
   संता :– मैं तो दर्जी को दे आया।

2. बंता :– यार 2 बार तेरे रेस्टोरंट में आया
   पर दोनों बार ताला लगा हुआ था।
   संता :– तू लंच टाइम में आया होगा,उस वक्त मैं खाना खाने घर चला जाता हूँ।

3. संता :– यार उठ भूकंप आ रहा है। सारा घर हिल रहा है।
   बंता :– सो–जो, सो–जा, घर गिरेगा तो मकान मालिक का, हम तो किरायेदार है।

नेता और चारा

नितेश्वरी मसराम
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

एक दूरदराज के गाँव में नेता जी का भाषण था करीब 25 मील के सड़क प्रवास के पश्चात् जब वे सभा स्थल पर पहूंचे तो देखा की वहा सिर्फ एक किसान उन्हें सुनने के लिए बैठा हुआ था। उस अकेले को देख नेता जी निराश भाव से बोले तुम तो एक ही हो समझ नहीं आता अब मैं भाषण दूं या नहीं।

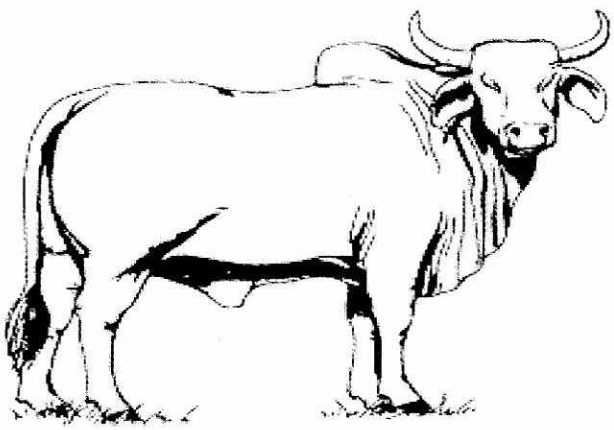

किसान बोला– साहब! मेरे घर पर 20 बैल है। मैं उन्हें चारा डालने जाऊँ और वहाँ एक ही बैल हो तो बाकी 19 बैल नहीं होने के कारण क्या उस एक बैल को उपवास बना दिया जाए? किसान का बढ़िया जवाब सुन नेता जी खुश हो गए और फिर मंच पर जाकर उस एक किसान को दो घंटे का भाषण दिया। भाषण खत्म होने पर नेता जी बोला भाई तुम्हारी बैलों की उपमा मुझे पसंद आई । तुम्हे मेरा भाषण कैसा लगा। किसान ने जवाब दिया – साहब! 19 बैलो की गैरहाजिरी में 20 बैलों का चारा एक ही बैल को नहीं डालना चाहिए, इतनी अक्ल मुझमें है पर आप में नहीं।

बेटियाँ

हिमांशु
बी ए चतुर्थ सेमेस्टर

घर को बोझ नही होती है बेटियाँ
बल्किढोती है घर का सारा बोझ
वे है तो
सलामत हैं आपके
कुर्ते के सारे बटन
बची है उसक धणलता।
उनके होने से ही
चलते हैं आपके हाथ
और आपकी आँखे ढूँढ लेती है
अपनी गुम हो गई कलम
घड़ी हो या छड़ी
च मा हो या अखबार
या किताबें, कोट और जूते
सब कुछ होता है यथावत
बेतरतीब बिखरी नहीं होती है चीजें
खाली नहीं रहता कभी
सिरहाने तिपाई पर रखा ग्लास
वे हो तो है तो
मकड़ियाँ फैला नही पाती है जाले
तस्वीरों पर जम नही पाती है धूल
कभी मुरझाते नहीं गमले के फूल
उनके होन पर
समय से पहले ही आने लगती है
त्यौहारों की आने की आहट
वे है तो
समय से मिल जाती है चाय
समय से दवाइयाँ
और समय पर
पहुँच पाते है दफ्तर
उनके होने से ही
ताजा बनी रहती है घर की हवा
बचा रहता है मन का हरापन

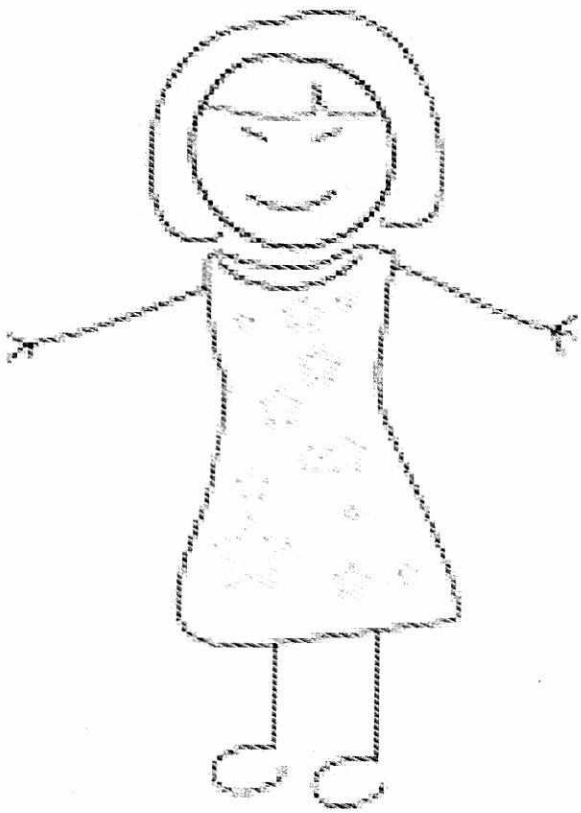

शोर शराबे में डूबा है सारा जंहा

कंचन

बी ए द्वितीय सेमेस्टर

शोर शराबे में डूबा है सारा जंहा ।

कृष्ण की बंसी सुनाई देगी कहॉ ।।

माखन खाकर बोल मधुर चाहिये।

कठोर जग को अब कृष्ण चाहिये।।

रूपये देख मीठे होते लोग यहॉ ।

सच्चाई की कडवाहट चाहिये वहॉ।।

देवकी यशोदा की नटखट चाहिये।

मॉ को आज्ञाकारी सा कृष्ण चाहिये।।

राधा को नहीं द्रोपदी को चाहिये।

संरक्षक भाई जैसा अब कृष्ण चाहिये।।

वे तो आयेंगें नहीं उनकी छवि चाहिये।

जग सुधारक इंसान में ही कृष्ण चाहिये।।

रखता है जो देश का खयाल ।

वो ही इच्छा वो ही दिल चाहिये।।

कंस को मात देने वाला चाहिये।

जग भी हुआ पापी,

कृष्ण चाहिये

कृष्ण चाहिये।।

कलयुग की द्रोपदी

अनीस अख्तर
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

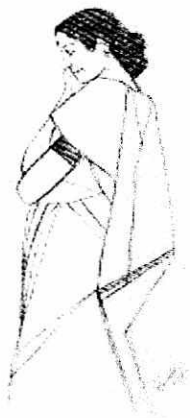

काकी से की प्रार्थना, नवा नवाकर शीश
प्रिये हमें दे दीजिए रुपये चार सौ बीस
रुपये चार सौ बीस, आज जुआ खेलेंगे
यह संख्या बलवान, शर्तिया हम जीतेंगे
लगा दिए वे रुपये, एक दाव पर सारे
दुगने आये लौट, हौसले बढ़े हमारे
साहस आगे बढ़ा, दांव पर दांव लगाए
हार गए सब, घर आए मुंह को लटकाए
कानी बोली क्या हुआ कैसी बीती रात
कितने आये जीतकर सच–सच बोलो बात
सच–सच बोलो बात सुनाया संकट उनका
जीत भाड़ में गई, हार बैठ हम तुमको
सुनकर देवी जी ने मारा एक ठहाका
मुझे द्रोपदी समझा है क्या तुमने काका,
धबराओ मत चिंता छोड़ो पिओ खाओ
जीत गए जो कौरव उनके पते बताओ
तन–मन व्याकुल हो रहा क्या होगा रधुनाथ
लेकर बेलन हाथ में चली हमारे साथ
चली हमारे साथ, देख बूढ़ी रणचंडी
कौरव–दल की सारी जीत हो गई ठण्डी
दुःशासन जी बोले क्षमा कीजिए हमको
यह कलयुगी द्रौपदी रहे मुबारक तुमको
काकी बोली, यो नहिं पीछा छोडूं भइए
लौटाओ सब इनसे जीते हुए रुपइए।

सवेरा

प्रिया कुमारी
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

सूरज निकला, हुआ सवेरा

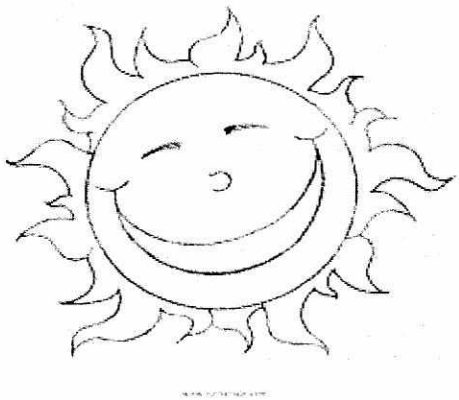

पंछियों ने भी लगाया बसेरा

सुगंधित पवन मंद–मंद बहे

मौसम ने खुशी का रंग बिखेरा।।

सिमट गया अब रात का पहरा

छुप गया अब चांद का चेहरा

सपनों ने अभी क्या तुमको धेरा।।

सितारे छुप गए, अब फूल खिल गए

मोती शबनम के धूल में मिल गए

रवि निकला बांध उजाले का सेहरा

सोने जैसा चमका प्रभात का चेहरा।।

समय यही पहचान बनाने का

जीवन को आनंदित करने का

समझ गया जो जीवन चक्र का धेरा

हर पल सुन्दर होगा जीवन में तेरा।।

पॉलिथीन

नेहा

बी ए चतुर्थ सेमेस्टर

आधुनिकता के दौर में, हर घर में आनी–जानी।

पी. बी. सी. है माता इसकी प्लास्टिक है नानी।।

सौ फायदे करके ये नुकसान हजार करती है।

बे ाक पॉलिथीन है बाजार की महारानी।।

प्लास्टिक और पॉलिथीन का ऐसा जमाना आया।

इधर प्लास्टिक, उधर प्लास्टिक हर जगह ऐसा छाया।।

अंधाधुंध उपयोग कर रहे क्यों मूर्ख अज्ञानी।

बेशक पॉलिथीन है, बाजार की महारानी।।

इस्तेमाल करके इसको फिर इधर–उधर ही गिराया।

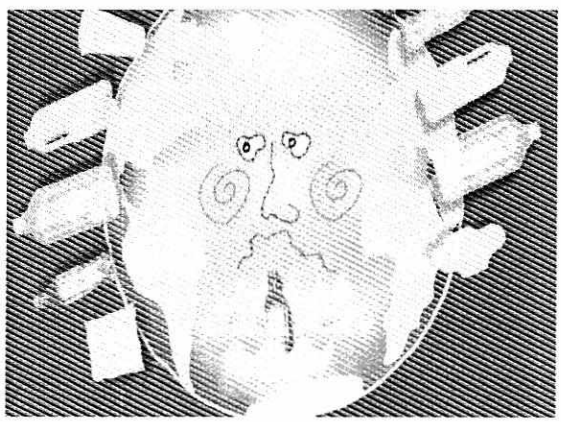

मिट्टी की उर्वरता घट गई, नाली में जाम लगाया।।

गाय निगलकर इसको मर गई, रखनी थी निगरानी ।

बेशक पॉलिथीन है, बाजार की महारानी ।।

अक्सर लोग भरकर पानी रखते है बोतल में।

कैंसरजनक पदार्थ फिर पैदा हो जाते है उस जल में।।

ज्यादा समय भरकर रखने से दूशित हो जाता है पानी।

बेशक पॉलिथीन है बाजार की महारानी।।

पॉलिथीन के सामने किसी की भी चलती नही है।

कई साल पड़ी रहे, मगर गलती नही है।।

जला दोगे तो होगी फिर भी स्वच्छ वायु की हानि।

बेशक पॉलिथीन है, बाजार की महारानी।।

बेजान नही अब कोई भी, पॉलिथीन के जहर से।

मगर बच नही पाता, फिर भी इसके कहर से।।

तौबा करके भी एक दिन, घर पड़ जाती है लानी।
बेशक पॉलिथीन है, बाजार की महारानी।।
पॉलिथीन का त्याग करे, कोई इसे घर ना लाये।
समय रहते ही हम सब अब सचेत हो जाये।।
वरना इसकी वजह से एक दिन याद आयेगी नानी।
बेशक पॉलिथीन है, बाजार की महारानी ।।
बहिश्कार ही है इससे, बचने का सही तरीका ।
कब से चिल्ला रहे है हम, ले लो ज्ञान फ्री का।।
निपटान जरूर होगा, अगर सबने मिलकर ठानी।
बे ाक पॉलिथीन है, बाजार की महारानी।।

बेटी की पुकार

निधि

बी ए द्वितीय सेमेस्टर

भारत की मान्यता है कि बेटींया लक्ष्मी का स्वरूप होती है
लेकिन यह सब कहने सुनने की बातें है।
बेटियों को लक्ष्मी कहने वाले लोग ही उनका शोषण करते है
उन्हे इस दुनियां में आने से पहले ही मार दिया जाता है।
बेटियों को भी जीने का अधिकार है ये है बेटी की पुकार।
बेटी यह कौरव से बोल रही, मॉ कर दे मुझ पे तु उपकार ।
मत मार मुझे जीवन दे दे, मुझको भी देखन देसंसार।
बिन मेरे मॉ तुम भैया को, राखी किससे बधंवाओगी।
मारती रही कौरव की हर बेटी, तो बहु कहॉ से लाओगी।
बेटी ही दुल्हन बेटी ही बहन, बेटी से ही परिवार ।
आ, आ.... आआ.....
मानेगें पापा भी अब मॉ, तुम बात बता के देखो न।
दादी नारी तुम भी नारी, सबको समझा के देखो ना।
बिन नारी प्रीत अधूरी है, नारी बिन सूना है घर बार।
नहीं जानती में इस दुनिया को मैने जाना मॉ बस तुझको।
मुझे पता है तुझे है फ्रिक मेरी, तू मार नहीं सकती मुझको।
फिर क्यों इतनी मजबूर है तू, मॉ तू क्यों है तू इतनी लाचार ।
आ, आ.... आआ.....
मुझे किस्मत पर बहुत भरोसा है और
मैने पाया है कि मैं जितनी मेहनत करती हूँ
मेरी किस्मत उतनी ही अच्छी ही होती जाती है।

बच्चों की जिम्मेदारी किस पर?

निशा पटेल

बी.ए. चतुर्थ सेम

हर बच्चा अनपढ़ पत्थर की तरहा है। उसके भीतर सुन्दर मूर्ति छिपी होती है। इस भूर्ति को शिल्पी की ही आंखें देख पाती हैं, ये शिल्पी है माता –पिता, शिक्षक और समाज, जो हर बच्चे को सँवारकर खूबसूरत व्यक्तित्व प्रदान करते है।

कहीं हम जरा–जरा सी गलती पर उन्हें अपमानित, दंडित और प्रताडित कर उनके आत्मविश्वास को ठेस तो नहीं पहुँचा रहे या इन्हें अति सुरक्षा प्रदान कर उनके स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास में

बाधक तो नहीं बन रहे। मेरे पास ऐसे तमाम उदाहरण हैं जहाँ माता–पिता और अभिभावक ने ऐसा भूल की है जिसका परिणाम त्रासदी के रुप में दिखा। कहीं माता–पिता के भय से बच्चे ने आत्महत्या की तो कहीं शिक्षक की मार से बचने के कारण बच्चा स्कूल न जाकर कहीं और जाने लगा और धीरे–धीरे वह ड्रग माफिया के चुंगल में फँस गया।

ये दोनों ही स्थितियाँ अतिवादी हैं। अति सुरक्षा के कारण बच्चे अपना स्वतंत्र व्यक्तितव नहीं बना पाते। वे ने तो निर्णय ले पाते हैं। और न ही किसी समस्या का समाधान खेज पाते है।

भक्ति का दुख समझें उसका दुख दूर होगा

कविता बरवा
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

अच्छी सोच मनुष्य को जीवन विकसित होने के लिए ही मिलता है। अगर सदा ही तमझ में पड़े रहेंगे। दरअसल, हम भौतिकवाद के इतने अधीन है। कि जीवन का उद्देश्य भूल चुके हैं। हम युवा पीढ़ी को बचपन से सही रास्ता नहीं दिखा पाते हैं। चीजें खरीदने के लिए कमाने में इतने मशगूल हैं कि जरा से झटके से हडबडा जाते हैं। युवाओं में आत्महत्या की प्रवृत्ति देखने में आती है, जबकि यह जीवन की कर्म–भूमि है और हमें हर मोड़ पर संधर्ष करना जरुरी हैं।

जब भी कोई अबसादग्रस्त मानसिकता से खुद को हानि पहुँचाने के बारे में सोचता है, तब यह बहुत जरुरी है कि हम उसकी मानसिक स्थिति को समझकर सहारा दे। अवसाद में भक्ति हमेशा उदास रहता है। हर वक्त उसे बहुत ज्यादा थकान रहती है। किसी भी जीज में मन नहीं लगता और निराशा धेरे रहती है। वह लोगों से अलग रहना पसंद करता है। और उसे जीवन का कुछ उद्देश्य समझ नहीं आता। उसे लगता है कि उसकी मन की स्थिति कभी नहीं बदलेगी इसलिए व्यक्ति खुद को हानि पहुँचाने के बारे में विचार करने लगता है। इसका एक और कारण है किसी के प्रति क्रोध। जब व्यक्ति को ऐसा लगता है कि उसके प्रियजनों ने उसे छोड़ दिया है या फिर उसका दृष्टिकोण नहीं समझ पा रहे है। तब उसके मन में बहुत क्रोध भर जाता है। पर वो इस क्रोध को जाहिर नहीं कर पाता और मन ही मन उसका क्रोध बढ़ता है। वह सोचता है कि अपने आपको नुकसान पहुँचाकर अपने प्रियजनों में अपराध बोध की भावना जगाएगा।

चाहे कारण कोई भी हो , लेकिन जो भी खुद को हानि पहुँचाने का निश्चय करता है, वो कहीं न कहीं जीना चाहता है, अगर उसे भावात्मक सहारा और सही मार्गदर्शन मिलें। किसी दूसरे के दुख को महसूस करना बहुत मुश्किल है जब भी कोई व्यक्ति अपने पीड़ा व्यक्त करें हमें उसकी पीड़ा महसूस करनी चाहिए। ऐसा करने पर व्यक्ति को लगता है कि वह अकेला नहीं है। खुद को हानि पहुँचाने वाले व्यक्ति को किसी एक तिनके का सहारा काफी होता है। इसके साथ–साथ युवाओं को सत्य को पहचानना चाहिए। सत्य यह है कि हमारा शरीर व्यक्तित्व और पहचान सब भ्रम है, जिस प्रकार हम सबने झूठे आकार ले रखे हैं। जैसे जाति, धर्म, लिंग, रंग–रुप, भाषा, प्रांत आदि। जब तक हम इनके अधीन रहते हैं, हम दुखी रहते हैं, लेकिन जैसे ही हम यह समझ जाते है कि हम सब एक ही महासागर की बूंदे हैं सब दुख खत्म हो जाता है।

जीवन क्या है ?

स्वाति शर्मा

बी ए चतुर्थ सेमेस्टर

जीवन एक ढंग से कर्ज लेना–देना है।

वह हमें आज देता है,

ताकि कल वापस ले सके।

वह पुनः देता है

और पुनः वापस ले लेता है,

आखिर हम लेते देते थक जाते है

और सदा की नीद सो जाते है।

पढ़ ाई और गुस्सा

दुर्गेश नंदिनी

बी ए चतुर्थ सेमेस्टर

गुस्से का हमारी शिक्षा से क्या रिश्ता ? मानाजाता है कि गुस्सा इंसान के मूल स्वभाव से जुड़ाहोता है । इसलिए अनपढ़ हो या पढ़े–लिखे, सब अपने स्वभाव के अनुरूप कम या ज्यादा गुस्सा करते है । एक अमेरिकी सर्वे में बताता है कि शिक्षित लोग कम, जबकि अनपढ या कम पढ़े–लिखे लोग ज्यादा गुस्सा करते है। हजार लोगों के अध्ययन का यह निश्कर्श कितना वि वसनीय है पता नहीं। पर इसकी एक व्याख्या यह जरूर हो सकती है कि जो लोग पढ़–लिखकर भी गुस्से पर काबू पाना नही सीखते,उन्होने अपनी शिक्षा के साथ न्याय नही किया और उन्हें अनपढ़ में गिनना गलत नही होगा।

आजमाती है, जिदंगी उसी को

पूजा कुमारी

बी ए द्वितीय सेमेस्टर

आजमाती है, जिदंगी उसी को

जो कठिन रास्ते पर चलना जानते है,
जिंदगी में जीत उसी की होती है
जो सब खोकर भी मुस्कुराना जानते है,
रहने दे आसमॉ, जीवन की तालाश कर,
सब कुछ यहीं है ना कही और तालाश कर ।
हर हसीन पल की जरूरत है हमें,
बीते हुये कल की जरूरत है हमें
सारा जमाना रूठ जाये हमसे
जो कभी ना रूठे ऐसे दोस्त की जरूरत है।
यादों की महक हवाओं में है
कुछ अपनापन सा बिखरा फिजाओं में
खुशियॉ चूमें आपका, कदम
यही सपना हमेशा निगाहों में है।।

"बुरा मत सोचो"

प्रतीक्षा

बी ए द्वितीय सेमेस्टर

"बुद्रिमान व्यक्ति को जितने अवसर मिलते है"

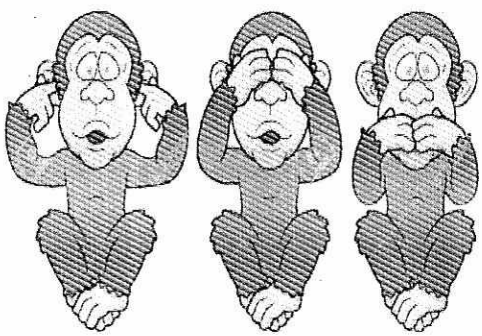

उन से अधिक वह खुद बनाता है।"

" किस्मत को सुधारना है तो चरित्र को सुधारें। चरित्र को सुधरना है तो व्यवहार को सुधारें।

व्यवहार को सुधारना है तो तो वाणी को सुधारें और वाणी को सुधारना है तों तो सोच को सुधारें। पहले गांधी जी ने तीन बंदरों के माध्यम से संदेश दिया था। लेकिन वैज्ञानिक युग में संदेश को समझें बुरा मत सोचो। बुरा मत देखो। बुरा मत सुनों। बुरा मत बोलो। जब तक हम बुरा सोचते रहेगे तब तक बुरा देखेगें भी, सुनेंगें भी और बोलेगें भी। लेकिन बुरा सोचना बंद कर दे तो शेष तीनों चीजों पर अंकुश अपने आप लग जायेगा।

प्रेरणा स्त्रोत

जामिल खल्को
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

प्राचीन काल की बात है आठ–दस बच्चों का एक समूह था। उस समय आज की तरह यातायात के साधन नहीं थे। स्कूल गाँव से दूर होने के कारण इन बच्चों का समूह खेत खलियानों एवं बगीचों से होकर स्कूल जाता था। वे बच्चे लौटते समय बहुत बदमाशी करते थे, खेतों में लगे फसलों को नोचते, खलियानों में जगह–जगह गड्ढे बना देते थे।

एक दिन की बात है स्कूल से लौटते समय बच्चे एक बगीचे में धुस आए, सभी बच्चे आम के पेड़ पर चढ़कर आम तोड़ने लगे ओर अन्य फल भी तोड़ डाले। उस समूह में मुन्ना नाम का एक बालक था, जो कभी शैतानी नहीं करता था। जब सभी बालक फल चुरा रहे थे तब वह उस बाग में लगे रंग–बिरंगे फूलों को निहारते हुए, एक गुलाब का फूल तोड़ा और उसकी सुंदरता का आनंद लेने लगा। लेकिन बच्चों के शोर गुल के कारण माली वहाँ आ पहुंचा और बगीचे में बच्चों के इस तरह की मनमानी को देखकर आग बबूला हो गया। सभी बच्चे माली को आता देखकर भाग गये। किन्तु मुन्ना गुलाब का फूल लिये खड़ा रहा। ताजे गुलाब के फूल को उस बालक के हाथ में देखकर उस माली का गुस्सा सिर पर चढ़ गया और वह जैसे ही बालक को मारने के लिए हाथ उठाया, बालक ने करुण स्वर से कहा– बाबूजी! मुझे मत मारिये। बालक के इस वाक्य को सुनकर माली का गुस्सा थोड़ा ठंडा हुआ। माली ने बालक से कहा– चलो तुम्हारे बाबूजी के पास समझाता हूँ। मुन्ना बोला – मेरे बाबूजी नहीं है। उस माली को बालक पर दया आ गई और उसने बालक से कहा– बेट! अच्छा बनना चाहते हो, तो अच्छे बच्चों के साथ रहो। बालक को ऐसा लगा मानो उसके स्वर्गीय पिताजी फिर से प्रकट होकर उन्हें अच्छे रास्ते पर चलने के लिए उसका मार्गदर्शन कर रहे है। बालक इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर जीवन में आगे बड़ता गया। क्या आप जानते हैं कि यह मुन्ना कौन था ये मुन्ना भारत के भूत पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री जी थे। जिन्होंने अपनी ईमानदारी एवं कर्मठता के बल पर भारत की सुरक्षा एवं उन्नति हेतु अपने प्राणों की आहूति दे दी।

डगर न भूलना

जामिल खल्को
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

भूल न जाना ओ नारी अपने राह को
खो न देना ओ नारी अपने अस्तित्व को।
भूल न जाना नारी अपनी मंजिल को।
जीवन में कष्ट आएँगे सामना तुम करना,
हिम्मत मन हारना तुम टूट मत जाना तुम
पाना है उस मंजिल को तुम्हें भूल न जाना तुम
लगन अपनी अधूरी मत छोड़ना तुम
आगे ही आगे बढ़ते जाना ।

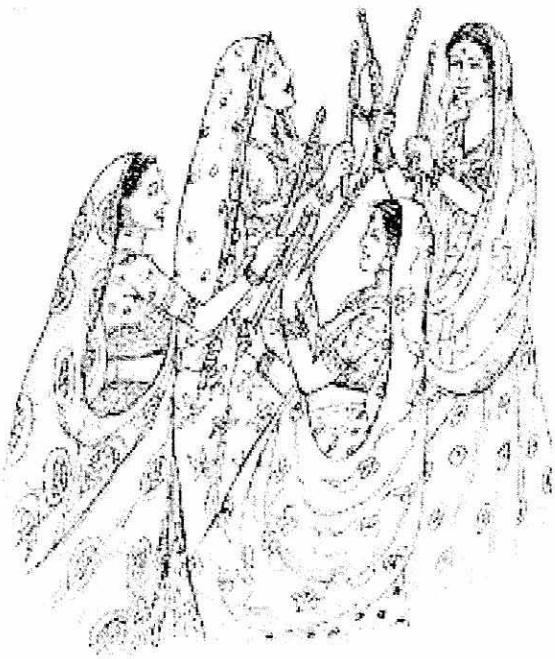

सम्पूर्ण समाज में मानव कल्याण

अल्पना पन्ना
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

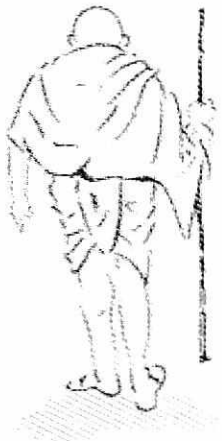

औरों को हँसते देखो मनु, हँसों और सुख पाओ।

अपने सुख को विस्तुत कर लो, सब को सुखी बनाओं।

जो व्यक्ति स्व–सुख स्वहित और स्वअर्थो तथा सीमित रहता है वह पशु तुल्य है। मनुष्य वह है जो मनुष्य के लिए जिए। प्रकृति ने मानव को विकसित मस्तिष्क जागरुकता चेतन शीलता इसीलिए प्रदान किया है, कि वह मानव जीवन की सार्थकता और परमार्थ को परस्पर पर्याय मानकार अपनी ऊर्जा, शक्ति, सामर्थ्य, और क्षमता को परोपकारिता से संबद्ध करने का यशस्वी कार्य सम्पादित कर सके।

जो फूलों की खेती करता है, उसके पथ पर प्रकृति फूल बिछा देती है। जो दूसरों के लगाने के लिए मेंहदी स्वतः ही लग जाती है अर्थात अच्छे कार्य करने वाले की भलाई स्वतः हो जाती है। मानवतावादी मानव कल्याण के लिए हँसते–हँसते धर्म और संस्कृति की बलिवेदी पर शहीद हो जाते है। ईसा मसीह परमार्थ पर उत्थान और लोक–कल्याण के निर्मित ही क्रूस पर चढ़ गये।

गाँधीजी के अनुसार गाँधी जी ने सत्याग्रह और अहिंसावाद को, निज खातिर नहीं वरन् पर कल्याण खातिर ही अपने चिंतन, कार्यक्रम और क्रियान्वयन में सम्मिलित किया था।

प्रो. आरनोल्ड ने लिखा – भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति इसलिए स्वीकार्य है, क्योंकि इसमें मानव जीवन को लक्ष्य स्व नहीं वरन् पर का भाव है। आज मानव कल्याण देवत्व और प्रभुत्व के बीच की कड़ी है।

मानव को पाराविक गुणों का अन्त करते हुए मानवीय गुणों का विकास करना चाहिए तथा मानवता अथवा देवत्व की ओर अग्रसर होना चाहिए। मानवता दया, प्रेम, धर्माचरण, परोपकार, अहिंसा, करुणा, तप त्याग, विद्या, दानशीलता, सद्विवेक, चेतना, चिन्तन, सद्भावना, सद्गुण, सच्चरित्रता, आतमबल तथा निर्भयता आदि विशिष्ट गुणों के कारण मानव ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है।

कभी–कभी मानव अपने दुराचरण द्वारा पशु से पीछे छूट जाता है। मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो अपना सिर सीधा रखता है, हाथों द्वारा स्वतंत्र रुप से कार्य करने का वरदान प्राप्त किया है।

परोपकार द्वारा वह इस वरदान को सार्थक करे। मानवीय मूल्य मानवता की प्राण वायु है उनके अभाव में मानव सर्वधा निर्जीव हो जायेगा।

सोच

अश्विनी कुमार
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

मनुष्य सदैव ही अपने व्यवहार के द्वारा पहचाना जाता है अर्थात् उसका व्यवहार उसके सोच पर निर्भर करता है। कहा जाता है कि जिस व्यक्ति का व्यवहार जितना अधिक विनम्र, विनीत तथा मिलनसार और दयामयी होता है। उसके विचार (सोच) उतने ही अधिक सकारात्मक तथा सामान्य होता है।

सकारात्मक सोच सदैव ही मनुष्य के जीवन को सहज बनाती है अथवा उसे समाज में पहचान दिलाती है। इस सोच के कारण कोई भी किसी व्यक्ति के प्रति किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रखता।

नकारात्मक सोच सर्वत्र ही विनाशकारी होता है। अर्थात् वह कभी भी दूसरे के प्रति अच्छा नहीं सोचत या किसी की भलाई नहीं चाहते। नकारात्मक सोच के कारण व्यक्तियों के मध्य सदैव शत्रुता की प्रवृत्ति बनी रहती है।

तार्किक या प्रायोगिक सोच सदैव मनुष्य की समस्याओं को हल करता है। अर्थात् यह प्रकृति समाज में परिवर्तन लाने में महत्त्वपूर्ण होते हैं क्योंकि ये रुढ़िवादी विचार तथा अंधविश्वासों का विरोध करते हैं। प्रायोगिक सोच तब तक किसी बात को स्वीकार नहीं करता जब तक उसकी पूर्ण जानकारी न हो इस लिए प्रायोगिक सोच श्रेष्ठ व महत्त्वपूर्ण है।

इसलिए कहा जाता है कि मनुष्य को सदैव अपनी सोच सकारात्मक तथा प्रायोगिक रखना चाहिए। इससे समाज का कल्याण होता है साथ ही मनुष्य दूसरे को भी अपने समान मानता है।

अर्थात् वह बसुधैव कुटुम्बकम की भावना रखता है।

आरजू

विमल कुमार
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

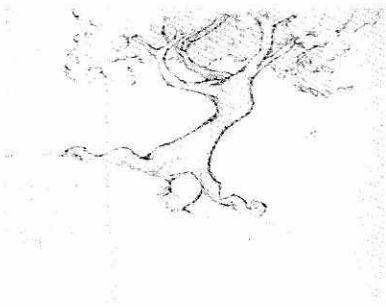

ऐसा लगता है कहीं दूर, मंजिल मेरा इंतजार कर रही है। रास्ते ही रास्ते है फिर भी दरवाजे पर वो मेरे दस्तक दे रही है। क्यों ना मैं अपने कदमों को आगे बढ़ाऊ अब तो बेडियाँ भी पैरों से टूटनें लगी है। हर राह पर जलेंगे दीप, मयूसियों का नामों निशान ना होगा।

अब तो मुस्कुराकर वो मुझे गले लगा रही है। कब से था उसको मेरा इंतजार करोड़ों में वो मुझे ढूंढ रही थी। अब तो खुद मंजिल ही, मुझ तक आने का ठिकाना पूछ रही है, कैसे करु मै उसका शुक्रिया उसका जो हर पल मेरा साथ निभा रही है।

वक्त की इस तेज दौड़ में धूप में वो लोगों को मुझे पहचान बाता रही है। हर ओर इसका ही नामोनिशा, कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ा खत्म हुआ सिलसिला हम मंजिल पर आ गये इस मंजिल पर ही हम अपनी मुहब्बत पा गये।

दिल के जज्बात

वर्गीश कुमार
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

दिल के जज्बात लब्जों के सहारे ही हैं। दिल कहता है वो कुछ तो हमारे भी हैं। क्या समझाएँ गुल को वो है। क्यों कुछ काहे भी तो उसके सहारे ही है। जज्बा किसे कहते है। वो देखे तो यहां हम सेहरा में एक शबनम के सहारे ही है उसकी नादानी कहे या जानी समझी साथ है नदी के फिर भी किनारे हैं।

कहते हैं अब ना कीजिए जिद हमसे, पर हमे तो अब इस जिद के सहारे ही हैं। तेरी आरजू क्या कोई गुनाह है। बता पर इसके फैसले भी तेरे सहारे ही है। हर आहट है मेरी बेताबी की गवाही ये आहतें भी तेरे आने के सहारे ही है।

शिक्षा का महत्व

राहुल
बी ए चतुर्थ सेमेस्टर

दो दोस्त थे। दोनो में गहरी मित्रता थी , परन्तु एक असमानता दोनो में थी । एक अनपढ़ था, दूसरा ज्ञानी था। वह दोनों विदेश में धन कमाने के उद्देश्य से गये वहाँ दोनो ने खूब धन कमाया और अपने शहर आ गए। एक मित्र जो ज्ञानी था, तुरन्त सारा धन कारोबार में लगा दिया तथा उसका कारोगार खूब चला, वह धनी हो गया ।

परन्तु दूसरा मित्र जो अनपढ़ था, वह कारोबार में घाटा होने से डर से धन रखा रहा।

धीरे–धीरे उसका धन समाप्त हो गया और वह अत्यन्त गरीब हो गया वह भीख माँगने लगा। यही है – शिक्षा का महत्व।

सत्याभास (संकलित)

प्रतिभा
बी ए चतुर्थ सेमेस्टर

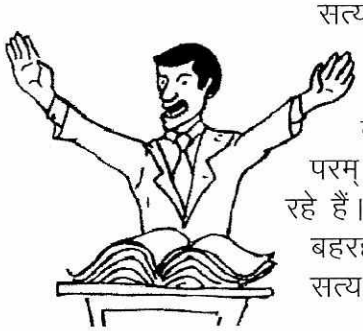

सत्य पर व्याख्यान देने से पहले पादरी ने चर्च मैं बैठे श्रोताओं से कहा कि जिन लोगो ने मैथ्यू का छत्तीसवाँ अध्याय पढ़ा हो वे कृपया हाथ उठाये। एक को छोड़कर सभी श्रोताओं ने हाथ उठा दिये। पादरी ने कहा– "बस , तब ठीक है आप लोगों को तो सत्य का महत्व बतलाना परम् आव यक है। " पादरी हैरान था कि इतने लोग सत्य को क्यों नकार रहे हैं। मैथ्यू का छत्तीसवाँ तो है ही नहीं और यह कहना है की उन्होने पढ़ा है। बहरहाल पादरी को संतोश था कि पूरी सभा में कम–से–कम एक श्रोता तो सत्य के प्रति सावधान है ।

प्रवचन समाप्त होने के प चात पादरी उस श्रोता के पास गये और पूछा–" महाशय। आपने हाथ नही उठाया था। क्या आपने मैथ्यू का छत्तीसवाँ अध्याय पढ़ा है?

वह बोला–"क्षमा कीजियेगा , मै थोड़ा ऊँचा सुनाता हूँ पहले मैं आपका प्रश्न ठीक से सुन नहीं पाया था। अब सुन पाया हूँ मैथ्यू का छत्तीसवाँ अध्याय तो मैं नित्य पढ़ता हूँ। पादरी ने सिर पीट लिया । सत्य का अंतिम स्तम्भ भी गिर गया।

मेरी भावना

रश्मि पटैल

बी ए द्वितीय सेमेस्टर

अंहकार का भाव न रखूं, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।

देख दूसरों की बढती को, कभी न ईर्ष्या भाव धॅरू।।

रहे भावना ऐसी मेरी ।

सरल सत्य व्यवहार करूँ।

बने जंहा तक इस जीवन में

औरों का उपकार करूँ।

मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहें।

दीन–दुखी जीवों पर मेरे, उर से करूणा स्त्रोत बहे।।

दुर्जन–क्रूर–कुमार्गरतों पर,।

क्षोभ नहीं मुझको आये।।

साम्य भाव रक्खूं मै उन पर

ऐसी परिणिती हो जाये।।

गुणीजनों को देख हद्रय में, मेरे प्रेम उमड आये।

बने जहॉ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पाये।।

फैले प्रेम परस्पर जग में।

मोह दूर पर रहा करे।।

अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहीं।

कोई मुख से कहा करे।।

बेटी

रितु विश्वकर्मा
बी ए द्वितीय सेमेस्टर

तेरी छोटी सी बगिया का
सबसे सुंदर फूल हूँ मॉ।
भूल ना जाना अर्पण करके,
तेरा ही अक्स हूँ मॉ।
जब भी तेरे ऑगन आउंगी,
यादें अपनी छोड जाउंगी।
तेरी ऑखों का तारा बनके,
दूर गगन में चमकूंगीं मॉ।
भूल ना जाना अर्पण करके,
जनम तू मुझको देती है।
फिर खुद से दूर कर देती है।
हूँ मैं तेरी प्यारी बिटिया और,
पापा की राजदुलारी मॉ।
भूल ना जाना अर्पण करके,

बुद्धि और साहस

संदीप

बी ए द्वितीय सेमेस्टर

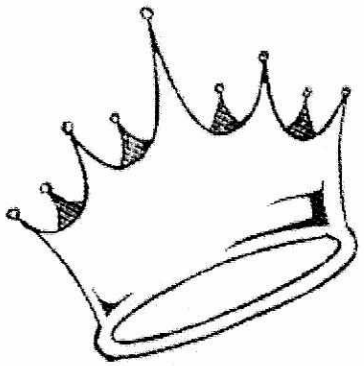

एक राजा के चार पुत्र थे अतः राजा की एक सुदंर बगिया थी । वहॉ एक बहुत सुंदर घोडा आता और उस बगिया में लगे फल फूल खाता और उस बगिया को तहस नहस करता चलता बनता एक बार राजा ने सोचा कि इस बगिया की देखभाल के लिये अपने पुत्रों से कहे । उन्होने अपने बडे पुत्र को बुलाया और कहा पुत्र तुम इस बगिया की देखभाल करना ना जाने कहॉ से रात्री के समय एक घोडा आता है उस बगिया को तहस नहस कर देता है । राजा यह सोचता था कि मेरा पुत्र राज्य को संभालने में सक्षम है कि नहीं बडा पुत्र पिता से आज्ञा लेता और रात्री बिताने के लिये उस बगिया में बिताने के लिये चला गया । अतः वह राजकुमार बहुत रात्री तक जागता मग वह घोडा नहीं आता लेकिन रात्री ज्यादा हो जाने पर वह सो जाता और कुछ ही देर में घोडा आता और बगिया में प्रवेश करके उसे तहस नहस कर देता । राजा ने अपने दूसरे बेटे को बुलाया और कहा कि बेटा में तुम्हे बगिया सोंपता हूँ। तुम इसकी देखभाल करना मगर उसकी भी नींद लग जाती और घोडा आता और बगिया को तहस नहस करके चलता बनता। फिर राजा तीसरे पुत्र को बुलाता और पुत्र पिता की आज्ञा लेकर चलता बनता मगर उसका भी यही परिणाम निकला । मगर राजा का छोटा बेटा बडा ही होनहार और चालाक था। फिर उसने अपने छोटे पुत्र को बगिया की देखभाल के लिये कहा और वह पिता की आज्ञा लेकर चलता बना उसे भी बगिया में नींद आने लगती है मगर वह हार नहीं मानता है और उसने अपनी उंगली काट ली और उस पर नमक डाल लिया और उसको फिर नींद ना आती और फिर घोडा आया और वह उसके पीछे भागने लगा अतः घोडा भी भागने लगा मगर उसने घोडे की पूंछ पकड ली घोडा बाजू में उडने लगा अतः वह घोडा देवताओं का था। वहां पहुंचते ही वह घोडे की शिकायत करता और यह भी बताता की मैने अपने पिता की आज्ञा पाकर बगिया की देखभाल के लिये कहा था । यह आपका घोडा रात्री के समय आता और बगिया को तहस नहस कर चलता बनता और चला जाता । देवताओं ने उसकी बात सुनी और वे बहुत प्रसन्न हुये और कहा कि पुत्र जिस तरह तुम्हारे पिता तुम्हारे चारों भाई की परिक्षा ले रहे थे उसी तरह हम भी। अतः यह घोडा तुम्हारी बगिया तहस नहस नहीं करेगा । मैं तुम्हे यह वरदान देता हूँ कि तुम हमेशा ही लक्ष्य की प्राप्ति कर सकोगे।अतः उसे उस घोडे ने बगिया तक छोडा और चलता बना। उसके पिता बहुत प्रसन्न हुये और यह घोष्णा कि वह आगे चलकर राजा बनेगा और प्रजा की रक्षा करेगा वह अपने पुत्र को गले लगाता और चलता बनता।

देश

वंदना
बी ए द्वितीय सेमेस्टर

ग्राम, नगर या लोगों का काम नहीं होता है देश ।
संसद, सडकों आयोगों का काम नहीं होता है देश।।
देश नहीं होता है केवल सीमाओ से घिरा मकान।
देश नहीं होता है कोई सजी हुई उंची दुकान।।
देश नहीं क्लब जिसमें बैठ करते रहे सदा हम मौज।
देश नही केवल बदूंके, देश नहीं होता है फौज।।
जहॉ प्रेम के दीपक जलते है वही दुआ करता है देश।
सज्जन सीना ताने चलते वहीं होता है देश ।।
हर दिल में अरमान मचलते वही हुआ करता है देश ।
वहीं होता जो सचमुच आगे बढता कदम –कदम।
धर्म जाति, भाषायें जिसका उंचा रखती है परचम।।
पहले हम खुद को पहचाने फिर पहचाने अपना देश।।
एक दमकता सत्य बनेगा, नही रखेगा सपना देश।।

कविता

आदर्श पाल
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

माँ बहुत याद आती है।
कुछ है, कचोटता सा भीतर
चोर से भी ज्यादा चोटता सा,
नोचता हुआ कोई दर्द जमाने का,
बेवजह ही कोई बात जब रुला जाती है।
ऐसे भी तेरी बहुत याद आती है।

सीखो

रश्मिता सतपथी
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

सैनिक से बलिदान सीखो,
पैड से तुम झुक जाना।
बैल से बोझ उठाना सीखो,
पत्थर से मजबूत बन जाना।
छत से तुम छाँव देना सीखो,
उजाले से सदा फैल जाना।
मोमबत्ती से रोशन करना सीखो,
सूरज से नियमित बनना।
मूर्ति से सहन करना सीखो,
ईश्वर से माफ कर देना।
इस धरती पर तुम आए हो तो,
कुछ अच्छा सीख कर ही जाना।

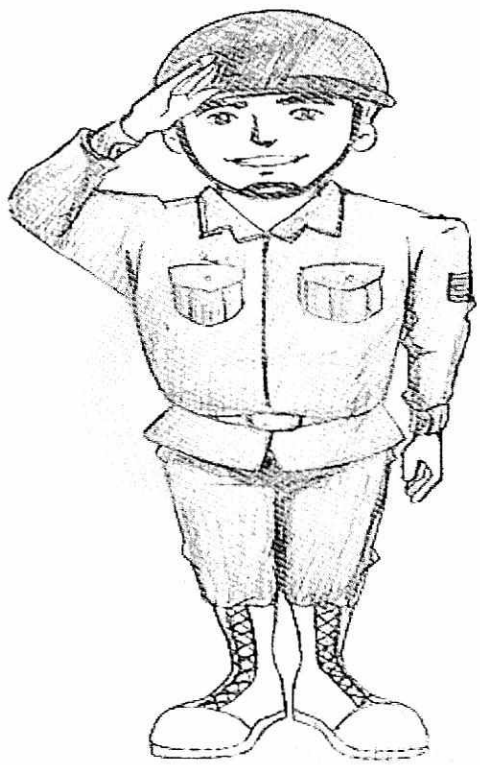

पिता की भावनाएँ

राहुल चौकसे
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

1. माँ को गले लगाते हो, कुछ पल मेरे भी पास रहो,
   पापा याद बहुत आते हो, कुछ ऐसा भी मुझे कहो।
2. मैने भी मन में जज्बात के तूफान समेटे है।
   जाहिर नहीं किया, न सोचा पापा के दिल में प्यार न हो।
3. थी ये मेरी ये जिम्मेदारी, धर में कोई मायूश न हो।
   मै सारी तकलीफें झेलु ओर तुम सब महफुज रहो।।
4. सारी खुशियाँ तुम्हे दे सकू, इस कोशिश में लगा रहू।
   मेरे बचपन में थी जो कमियाँ, तुम्हे महशूस न हो।।
5. समाज का नियम ही पिता सदा गम्भीर रहे,
   मन भाव छिपे हो लाख, आँखों से नीर बहे।।
6. करे बात की रुखी सूखी बोल बस हिदायत के।
   दिल में है प्यार माँ जैसा ही, किन्तु अलग तस्वीर रहे।।

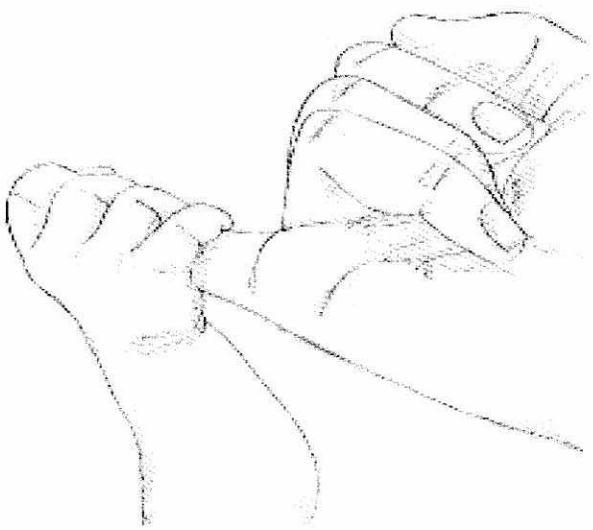

क्यों हम इतने बड़े हो गये?

रागिनी लाहोरिया
बी.ए. पष्टम सेमेस्टर

क्यों हम इतने बड़े हो गये?
क्या वो दिन थे
माँ की गोद और पापा के कन्धे
आज याद आ रहे है
सब मुझे।
रोते हुए सो जाना
खुद से बातें करते हुए खो जाना
वो माँ का आवाज लगाना,
खाना हाथों से खिलाना,
वो पापा का डांट लगाना,
जिद पूरी होने का इंतजार करना।
क्या वो दिन थे,
बचपन के सुहाने
क्यों इतनी दूर सब कुछ हो गया?
अब जिद भी अपनी,
सपने भी अपने,
किस के कहें क्या चाहिए मुझे
मंजिलो को ढूँढते हम
कहाँ खो गये?
क्यों हम इतने बड़े हो गये?

जय- पराजय

शिवानी

बी ए चतुर्थ सेमेस्टर

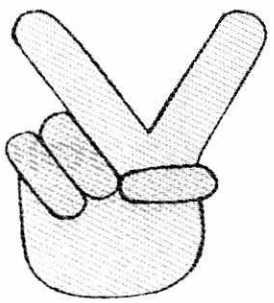

कोई क्यों हुआ पराजित?
क्या किसी के प्रतिद्वन्द्वी ने
पाया कोई अमर वरदान?
या किसी ने अपनी सफलता
दे दी है दूसरों को दान?
प्रेरित किया विजय को किसने
पराजित क्यों हुआ हताश?
हार के बाद ही जीत होती है,
फिर क्यों होना है निरा ा?
अगर सिर्फ विजय ही जीवन
तो क्या मृतक है आधे जन ?
जय–पराजय नही पूर्ण विराम,
इनसे तो जीवन है संग्राम।

सफलता का मूलमंत्र

कु. बंदना
बी ए चतुर्थ सेमेस्टर

जीत का जश्न मनाओ यारों।
हार का गम मिटाओ यारो।
मंजिल करीब है, मत ठिठकों यारों।
बस एक कदम उठाओ यारो।

सफलता मिली उनको ,
जो निरन्तर आगे बढ़े
प्रतिकूल परिस्थियों में,
अदम्य साहस से लड़े।
पर्वत पहाड़ों को लाँग
अपनी मंजिल तक चढ़े।
आज वही प्रतिभाओं की
भीड़ में स्थान बनाए रखे।

इतिहास तुम दोहराओं यारों।
मन चाही मंजिल पाओं यारों।
जीवन को एक मशाल बना लो।
स्वयं जलकर अपना
पथ उजियारा कर लो।

लक्ष्य के प्रति न भ्रम कोई पालो,
सफलता का यह मूलमंत्र अपना लो
संकट से न घबराओं यारों।
मनचाही मंजिल पाओं यारों।